Major Semester-1, 2025-2027 DATE - 06/02/2026

The merits and demerits of Experimental method

मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धतियों में प्रयोग विधि या प्रयोगात्मक विधि का विशेष स्थान है। आधुनिक विद्वानों के अनुसार मनोवैज्ञानिक अध्ययन की एक मात्र पद्धति - प्रयोगात्मक पद्धति ही है। यह विद्वानों के आधुनिक विद्वानों के अनुसार, क्योंकि मनोविज्ञान एक प्रयोगात्मक विज्ञान है। अतः इसके अध्ययन के लिए केवल शुद्ध वैज्ञानिक पद्धति का ही प्रयोग करना चाहिए और प्रयोगात्मक पद्धति एक वैज्ञानिक पद्धति है।

मनोविज्ञान को विज्ञान की श्रेणी में पहुँचाने का श्रेय वास्तव में प्रयोगात्मक विधि को ही है। मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि की स्थापना का श्रेय जर्मनी निवासी मनोवैज्ञानिक वुण्ट (Wundt) को जाता है। उन्होंने 1879 ई० में लिपजिग नामक स्थान में प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना की थी, प्रयोगों के माध्यम से आज कितने नए अनुसंधान किए जा रहे हैं। वेबर आदि मनोवैज्ञानिक ने प्रयोगों के माध्यम से मनोविज्ञान में शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं के क्षेत्र में काफी योगदान किया है। स्मरण एवं विस्मरण के क्षेत्र में तथा एबिंगहास पेवलव, कोहलर, कोफ्का, स्कीनर आदि मनोवैज्ञानिक ने विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया है। इसी प्रकार समाज मनोविज्ञान में आलपोर्ट लेविन, शेरिफ आदि मनोविज्ञानी ने प्रयोगात्मक विधि का उपयोग कर कई ऐसे नियमों को प्रतिपादित किया, आज मनोविज्ञान की सभी शाखाओं में प्रयोगात्मक विधि का निरन्तर उपयोग किया जा रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक मनोविज्ञान प्रयोगात्मक विधि की देन है।

प्रयोग का अर्थ ऐसे निरीक्षण से है। जो नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है। किसी पूर्व कल्पना के सत्यता की जाँच को प्रमाणित करने के उद्देश्य से जो निरीक्षण नियंत्रित परिस्थितियों में किया जाता है। उसे प्रयोग कहते हैं।

किसी भी मनोवैज्ञानिक प्रयोग के मुख्य भाग होते हैं/

(i) प्रयोगकर्ता !– प्रयोग में जो व्यक्ति प्रयोग करता है, उसे प्रयोगकर्ता या निरीक्षक कहते है। प्रयोगकर्ता किसी अवधारणा की जाँच के लिए अध्ययन करता है। किसी भी प्रयोग में एक या एक से अधिक प्रयोगकर्ता हो सकते है।

(ii) प्रयोज्य !– जिस व्यक्ति पर प्रयोग किए जाते हैं उसे प्रयोज्य कहते है। प्रयोग में प्रयोज्य की संख्या एक या एक से अधिक हो सकती है/

(iii) प्रयोगशाला – प्रयोग का कार्य जहाँ सम्पन्न होता है उसे प्रयोगशाला कहते है।

(iv) उपकरण – प्रयोगशाला में प्रयोग करने के लिए कुछ यंत्रों एवं उपकरणों की आवश्यकता होती है/

(v) परिवर्त्य – मनोवैज्ञानिक प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण अंग परिवर्त्य या चर होते हैं/

(A) स्वतंत्र चर – स्वतंत्र चर किसी मनोवैज्ञानिक प्रयोग में समस्या से संबंधित वह पहलू है जिसमें क्रमबद्ध रूप से मात्रा परिवर्तित करके उसके पर स्वतंत्र रूप से अपना प्रभाव डालते है/

(B) आश्रित चर – आश्रित चर स्वतंत्र चर के उन प्रभावों को कहते है जो किसी विशिष्ट विषय पर पड़ते हैं –

(C) नियंत्रित चर – जिन चरों को हम प्रयोग के समय नियंत्रित रखते है उसे प्रयोगात्मक चर कहते हैं – तीसरे नियम पर अध्याय – का प्रभाव

प्रयोगात्मक विधि के गुण – लाभ, विशेषताएँ ! –

(i) वैज्ञानिक प्रकृति – इस विधि के अन्तर्गत नियंत्रित परिस्थितियों में किए जाने वाले प्रयोग तथा अर्थात् निष्कर्ष प्रदान किए जाते हैं –

(ii) नियंत्रित परिस्थिति –

(iii) केवल एक कारक के प्रभाव की जाँच –

(iv) पशुओं के अध्ययन के लिए उपयुक्त –

(v) एक सम्पूर्ण विधि – IK 06/09/2026 –